B.M.E.B.R. Vol. XVII No. 1-2, (1996) pp.76-92

कुमाँऊ हिमालय में संकटापन्न कस्तूरा मृग की उपलब्धि एवं बंधनकालीन जीवन व्यवहार पर आधारित अध्ययन

इनी राम[1], ज्ञानेन्द्र पाण्डेय[2] एवं कृष्ण चन्द्र तिवारी[3]

31.7.95 को प्राप्त

आयुर्वेद की बहुमूल्य एवं आशु प्रभावकारी प्राणिज औषधियों में प्रसिद्ध कस्तूरी के प्राकृतिक श्रोत वन्य जीवन कस्तूरा मृग का बहुपक्षीय सूत्ररूप में उल्लेख प्राचीन चिकित्सा पद्धति में प्राप्त होता है, यथा--

कामरूपोद्भवा कृष्णा नेपाली नीलवर्णपुक्।
काश्मीरे कपिलच्छाया कस्तूरी त्रिविधा स्मृता।।

कुमांऊ हिमालय एवं गढ़वाल हिमालय में कस्तूरी मृगों के प्राकृतिक वास का सर्वेक्षण, निरीक्षण एव अध्ययन करने के फलस्वरूप अनेक महत्वपूर्ण जानकारी प्राणि के विभिन्न पक्षों पर संकलित की गयी हैं, जिसको कुमाँऊ अंचल के विशेष संदर्भ में हिमाद्रि क्षेत्रों में इस वन्य जीवन की उपलब्धि पर प्रकाश डाला गया है। इस वन्य प्राणी की क्षीण प्राय संख्या, अवैधानिक आखेट, संरक्षण की आवश्यकता एवं जीवन के विकास आदि पक्षों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित एक मात्र कस्तूरा मृग अनुसंधान परियोजना के क्रियान्वयन के प्रसंग में लगभग दो दशकों से अधिक की अवधि में मृग पालन, पोषण, रहन-सहन, अनुकूलन, खाद्य, शारीरिक वृद्धि गर्भस्थापन-प्रसूति, कामेच्छा, प्रजनन, शावक, अनुकूलन, विकृति, उपचार, जन्म-मृत्यु दर, कस्तूरी दोहन तथा सम्बन्धित समस्त पक्षों का सूक्ष्म निरीक्षण प्रत्यक्ष ज्ञान एवं प्राणियों के सम्पर्क में सत्त-अहर्निश-प्रेक्षण, विश्लेषण एवं समीक्षा

---

1. लेब० टेक्नीशियन - कम - डिसपेन्सर, कस्तूरा मृग अनुसंधान केन्द्र, महरूड़ी।
2. प्रभारी अधिकारी, भा०आ० भे०अ० संस्थान, ताड़ीखेत।
3. सर्वेक्षण अधिकारी, भा०आ०भे०अ० संस्थान, ताड़ी खेत।
भारतीय आयुर्वेदीय भेषज अनुसंधान संस्थान, ताड़ीखेत - 263663 (रानी खेत), अल्मोड़ा जनपद, उ०प्र०।